



INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 3; 2025; Page No. 57-60

Received: 05-02-2025
Accepted: 14-04-2025

छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उत्थान में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की भूमिका

Amar Kumar Bharti

Research Scholar, Department of History, Guru Ghasidas University Bilaspur, Chhattisgarh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.15698008>

Corresponding Author: Amar Kumar Bharti

सारांश

यह शोधपत्र छत्तीसगढ़ राज्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उभार को समझने के लिए पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के योगदान की विश्लेषणात्मक व्याख्या करता है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक चेतना है जो भारतीय परंपरा, दर्शन, भाषा, संस्कार, और जीवन-मूल्यों को राष्ट्र के पुनर्निर्माण का आधार मानती है। इस संदर्भ में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य न केवल एक आध्यात्मिक गुरु रहे, बल्कि एक दूरदृष्टा समाज-संस्कृतिकर्मी भी थे, जिन्होंने गायत्री परिवार और युग निर्माण योजना जैसे संगठनों के माध्यम से छत्तीसगढ़ समेत पूरे भारत में सांस्कृतिक जागरूकता और राष्ट्रचेतना का विस्तार किया। यह शोध उनके विचारों, आंदोलनों और रणनीतियों का विस्तार से मूल्यांकन करता है कि कैसे उन्होंने सामाजिक समरसता, शिक्षा, नैतिकता, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण पुनरुत्थान के माध्यम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को जनमानस से जोड़ा। छत्तीसगढ़ जैसे आदिवासी-बहुल राज्य में, जहाँ पारंपरिक संस्कृति और आधुनिकता के बीच द्वंद्व था, वहाँ आचार्य शर्मा की सोच ने संवाद और संतुलन की नई संभावनाएँ खोलीं। यह शोध सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को एकात्म मानववाद और समावेशी राष्ट्रीय विचारधारा के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसका आधार भारतीय ज्ञान परंपरा और आध्यात्मिकता है।

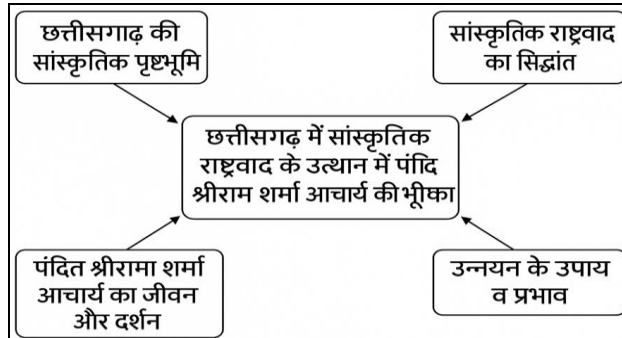
मूलशब्द: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, छत्तीसगढ़, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, युग निर्माण योजना, वैदिक पुनर्जागरण, भारतीय संस्कृति, गायत्री परिवार, समाज सुधार, आध्यात्मिक आंदोलन, राष्ट्रनिर्माण, ग्रामोत्थान, आत्मबल, नैतिकता

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ भारत का एक ऐसा राज्य है जिसकी सांस्कृतिक पहचान अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यह प्रदेश न केवल जनजातीय परंपराओं, लोक कलाओं और सांस्कृतिक उत्सवों से परिपूर्ण है, बल्कि यहाँ की सामाजिक संरचना में आध्यात्मिकता, सामूहिकता और प्राकृतिक जीवनशैली का गहन समावेश है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति मूलतः लोक आधारित है, जहाँ प्रकृति, जीवन, और धार्मिक विश्वास आपस में गुंथे हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह राज्य

लंबे समय तक विकास की दौड़ में पीछे रहा, लेकिन इसके सांस्कृतिक वैभव ने हमेशा एक अद्वितीय पहचान बनाए रखी। ऐसे क्षेत्र में यदि कोई वैचारिक और सामाजिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ होती है, तो वह महज एक राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक क्रांति होती है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस सांस्कृतिक क्रांति को गहराई से समझा और उसे एक सशक्त आंदोलन का स्वरूप दिया। उनका उद्देश्य केवल धार्मिक चेतना फैलाना नहीं था, बल्कि भारतीय संस्कृति के आधार पर एक नवभारत के

निर्माण की कल्पना को मूर्त रूप देना था। उन्होंने छत्तीसगढ़ जैसे क्षेत्रों में जनसाधारण के बीच जाकर उनके आत्मबल, नैतिक चेतना और सांस्कृतिक गौरव को जाग्रत किया। यह शोधपत्र उनके इसी योगदान को रेखांकित करता है।



यह चार्ट "छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उत्थान में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की भूमिका" को समझाने के लिए एक शैक्षणिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसमें केंद्र में मुख्य विषय रखा गया है, और उससे जुड़े चार प्रमुख आयामों को विस्तार से दर्शाया गया है:

केंद्र

"छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उत्थान में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की भूमिका"

यह विषयवस्तु केंद्र में रखी गई है जो बताता है कि आचार्य जी ने छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक चेतना को राष्ट्रवाद से कैसे जोड़ा।

1. छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

यह भाग बताता है कि छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंस्कृति, आदिवासी परंपराएं, देवालय, त्योहार, और भाषा किस प्रकार एक विशेष सांस्कृतिक संरचना बनाते हैं।

इस पृष्ठभूमि ने आचार्य जी को प्रेरणा दी कि वे सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से राष्ट्र के प्रति भावना विकसित करें।

2. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सिद्धांत

यहां यह समझाया गया है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक विचारधारा नहीं बल्कि एक जीवंत संस्कृति, मूल्य, नैतिकता और इतिहास से जुड़ा आंदोलन है।

आचार्य जी का दृष्टिकोण था कि जब तक समाज सांस्कृतिक रूप से जागरूक नहीं होगा, तब तक सशक्त राष्ट्र निर्माण असंभव है।

3. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन और दर्शन

यह खंड उनके जीवन, साहित्य, यज्ञ परंपरा, गायत्री परिवार, और "युग निर्माण योजना" जैसे अभियानों को दर्शाता है। उनकी शिक्षाओं ने आत्मबल, नैतिकता और सेवा को राष्ट्रवाद का आधार बनाया।

4. उन्नयन के उपाय व प्रभाव

इसमें यह दर्शाया गया है कि उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, नैतिक जागरण, महिला सशक्तिकरण और विज्ञान एवं अध्यात्म के समन्वय को कैसे प्रोत्साहित किया।

इन प्रयासों का प्रभाव यह हुआ कि समाज में एक गहरी सांस्कृतिक चेतना जागृत हुई, जिससे राष्ट्रवादी भावना का विकास हुआ।

निष्कर्ष

यह चार्ट स्पष्ट करता है कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने छत्तीसगढ़ जैसे सांस्कृतिक राज्य में परंपरा और राष्ट्रवाद को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया। उनका दृष्टिकोण सामाजिक पुनर्जागरण और नैतिक नेतृत्व का था, जिससे राष्ट्रवाद जन-जन तक पहुंचा।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा (The Concept of Cultural Nationalism)

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अर्थ केवल राजनीतिक प्रभुता या भूगोलिक सीमाओं की रक्षा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी चेतना है जो राष्ट्र की आत्मा को उसकी संस्कृति में खोजती है। यह विचारधारा मानती है कि कोई भी राष्ट्र तभी सशक्त और एकीकृत बन सकता है जब उसके नागरिकों में साझा सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा और सामाजिक नैतिकता के प्रति श्रद्धा हो। भारत जैसे विविधता-प्रधान देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल एक दृष्टिकोण नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला है। भारतीय संदर्भ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों और भारतीय दर्शन की उस परंपरा से निकला है जो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे सार्वभौमिक आदर्शों को मान्यता देता है। यह विचारधारा भारतीय संस्कृति को वैश्विक मानवता से जोड़ती है। यह केवल हिंदू राष्ट्रवाद नहीं, बल्कि एक समावेशी दृष्टिकोण है जिसमें सभी समुदाय, जातियाँ और परंपराएँ अपने सांस्कृतिक योगदान के माध्यम से राष्ट्र की एकता में भागीदार बनती हैं।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवन, दर्शन और युग निर्माण की अवधारणा

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य (1911-1990) भारतीय नवजागरण के उन प्रमुख ऋषियों में से एक थे जिन्होंने आध्यात्मिकता और सामाजिक जागरूकता के संगम से एक वैश्विक आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने अपने जीवन को साधना, सेवा और संस्कारों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने 'अखण्ड ज्योति' नामक पत्रिका, 'युग निर्माण योजना', 'गायत्री परिवार' और 'शांतिकुंज' जैसे संगठनों के माध्यम से करोड़ों लोगों को आत्मोद्धार और समाजोत्थान की दिशा में प्रेरित किया। उनकी सोच का केंद्रबिंदु था - "हम बदलेंगे, युग बदलेगा"। इस उद्घोष में निहित था कि व्यक्ति के नैतिक और चरित्रिक परिवर्तन से समाज और अंततः सम्पूर्ण राष्ट्र में परिवर्तन संभव है। उन्होंने कहा कि धर्म का अर्थ केवल पूजा नहीं, बल्कि आचरण और कर्तव्यनिष्ठा है। उनका वैदिक चिंतन आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त था। उन्होंने महिला उत्थान, शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्राम विकास और पर्यावरण जैसे विषयों को आध्यात्मिक आंदोलन का हिस्सा बनाया।

छत्तीसगढ़ में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की सक्रियता और कार्य

छत्तीसगढ़ में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों का प्रसार मुख्यतः गायत्री परिवार और युग निर्माण योजना की शाखाओं के माध्यम से हुआ। यह राज्य जहाँ एक ओर आदिवासी संस्कृति और परंपरा से जुड़ा रहा, वहीं दूसरी ओर सामाजिक समस्याएँ जैसे अशिक्षा, नशाखोरी, बाल विवाह, अंधविश्वास आदि भी प्रचलित थीं। आचार्य शर्मा के नेतृत्व में चलाए गए कार्यक्रमों ने यहाँ के समाज में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाए:

- 1. सामाजिक चेतना और नैतिकता:** गाँव-गाँव में सत्संग, कथा, यज्ञ, और प्रवचन के माध्यम से नागरिकों में आत्मबोध और नैतिक शिक्षा का प्रचार हुआ।
- 2. महिला सशक्तिकरण:** महिलाएँ, जो पहले सामाजिक गतिविधियों में सीमित थीं, अब यज्ञ संचालन, नेतृत्व, और शैक्षिक अभियान का हिस्सा बनने लगीं।
- 3. युवाओं की भूमिका:** युवाओं को संगठन में शामिल कर सेवा, शिक्षण और संस्कार आधारित प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- 4. ग्रामोत्थान कार्यक्रम:** खेती, जल संरक्षण, स्वच्छता, और ग्रामीण कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन मिला।

- 5. धार्मिक समरसता:** गायत्री परिवार द्वारा सभी जातियों, वर्गों और धर्मों को एक समान दृष्टि से देखा गया। इससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिला।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विकास में प्रयुक्त रणनीतियाँ

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए कई नवाचार और रणनीतियाँ अपनाईं:

साहित्यिक क्रांति: उन्होंने 3000 से अधिक पुस्तकें लिखीं जिनमें भारतीय संस्कृति, धर्म, विज्ञान, समाज और राजनीति पर आधारित गहन विचार प्रस्तुत किए गए। ये ग्रंथ छत्तीसगढ़ में भी व्यापक रूप से प्रचारित हुए।

जन चेतना अभियान: यज्ञ, संस्कार शाला, सत्संग, और रचनात्मक शिविरों के माध्यम से आमजन को जागरूक किया गया।

नैतिक शिक्षा आंदोलन: स्कूलों और गाँवों में नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया।

महिला यज्ञाचार्य कार्यक्रम: यह एक क्रांतिकारी कदम था जहाँ महिलाओं को धार्मिक नेतृत्व सौंपा गया, जो छत्तीसगढ़ जैसे पारंपरिक राज्य में विशेष महत्व रखता है।

आध्यात्मिक विज्ञान: धर्म और विज्ञान के समन्वय द्वारा आधुनिक युवाओं को आध्यात्मिकता से जोड़ा गया।

निष्कर्ष (Conclusion)

छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विकास पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की दूरदर्शिता और सतत प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने अपने आध्यात्मिक नेतृत्व के माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ने, जागरूक करने और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्वबोध दिलाने का कार्य किया। छत्तीसगढ़ जैसे राज्य, जहाँ लोक संस्कृति, आदिवासी परंपराएँ और सामाजिक चुनौतियाँ साथ-साथ विद्यमान थीं, वहाँ उनका कार्य एक सेतु का काम करता है - परंपरा और आधुनिकता के बीच, धर्म और विज्ञान के बीच, और व्यक्ति तथा राष्ट्र के बीच। उनकी कार्यपद्धति और विचारधारा आज भी प्रासंगिक हैं और यह बताती हैं कि राष्ट्र निर्माण केवल राजनीतिक परिवर्तन से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक पुनर्जागरण से संभव है। यह शोध इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करता है कि आचार्य शर्मा का योगदान छत्तीसगढ़ और भारत दोनों के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विकास में एक ऐतिहासिक प्रेरणा है। यह शोध इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है कि आचार्य श्रीराम शर्मा का योगदान छत्तीसगढ़ और भारत दोनों के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के

विकास में न केवल प्रेरणास्रोत रहा है, बल्कि उन्होंने एक ऐसी विचारधारा को जन्म दिया जो आज भी प्रासंगिक है। उनका दृष्टिकोण समावेशी था, जिसमें राष्ट्र की एकता, सांस्कृतिक विविधता, और नैतिक मूल्यों को समान रूप से महत्व दिया गया। इस दृष्टि से देखा जाए तो छत्तीसगढ़ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का जो स्वरूप विकसित हुआ, वह आचार्य शर्मा की विचारशीलता, लोकचेतना और रचनात्मक सक्रियता का मूर्तरूप था।

[University name unknown]; 2023.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

संदर्भ (References)

1. शर्मा पं. श्रीराम. अखण्ड ज्योति मासिक पत्रिका. हरिद्वार (IN): गायत्री तीर्थ शांतिकुंज
2. गायत्री तीर्थ शांतिकुंज. प्रकाशित साहित्य. हरिद्वार (IN): गायत्री तीर्थ शांतिकुंज
3. युग निर्माण योजना - अभियान ग्रंथावली. हरिद्वार (IN): गायत्री तीर्थ शांतिकुंज.
4. Mishra S. Cultural nationalism in India. New Delhi (IN): Routledge; 2012.
5. Chatterjee P. The nation and its fragments: colonial and postcolonial histories. Princeton (NJ): Princeton University Press; 1993.
6. Sharma A. Hindu spirituality and nationalism. New Delhi (IN): Oxford University Press; 2015.
7. Chauhan R. Cultural renaissance through Gayatri movement. Haridwar (IN): Gayatri Press; 2019.
8. Nandy A. The intimate enemy: loss and recovery of self under colonialism. New Delhi (IN): Oxford University Press; 1998.
9. Dube SC. Indian society. New Delhi (IN): National Book Trust; 1995.
10. Raj D. Social movements in India. New Delhi (IN): SAGE Publications; 2017.
11. Pandey G. The construction of communalism in colonial North India. New Delhi (IN): Oxford University Press; 1992.
12. Sen A. The argumentative Indian: writings on Indian history, culture and identity. New Delhi (IN): Penguin Books; 2005.
13. Singh R. Cultural nationalism and India. New Delhi (IN): Gyan Publishing House; 2016.
14. Kumar A. Revivalism and modernity in Indian context. New Delhi (IN): Jawahar Publishers; 2020.
15. Sharma V. Gayatri movement in Central India: a sociological perspective. Bhopal (IN): [Publisher unknown]; 2021.
16. Chaudhary K. Role of spiritual leaders in social reform. Delhi (IN): [Publisher unknown]; 2013.
17. Jain M. Dharma, nation and reform. New Delhi (IN): Vani Prakashan; 2017.
18. Kumar S. Spiritual nationalism in Indian politics. Hyderabad (IN): Orient Blackswan; 2022.
19. Acharya R. Gyan Yug ke Pravartak: Pt. Sriram Sharma Acharya. Haridwar (IN): Shantikunj Publications; 2020.
20. Tiwari R. Role of Gayatri Pariwar in Chhattisgarh's socio-cultural development [dissertation]. Raipur (IN):